



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 06 (जून, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

"खेत बचाओ अभियान" और किन्नौर: मिट्टी बचाओ, बगीचे बचाओ, किसान बचाओ

*डॉ. अरुण कुमार

वैज्ञानिक (फल विज्ञान) एवं विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान), RHRTS एवं KVK शरबो, किन्नौर,

डॉ. वाई.एस. परमार विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन (हि.प्र.), भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: arunkumar.negi@gmail.com

भारत सरकार के केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 1 जून 2026 से 30 जून 2026 तक देशभर में "खेत बचाओ अभियान" का आयोजन किया जा रहा है। इस अभियान का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा मध्य प्रदेश के रामसिया गाँव, रायसेन से किया गया। अभियान का मूल विषय है "मिट्टी बचाओ, खेती बचाओ, किसान बचाओ (Save the Soil, Save Farming, Save Farmers)"।

स्वस्थ मिट्टी → उत्पादक कृषि → समृद्ध किसान → सशक्त राष्ट्र", खेत बचाओ अभियान का मूल सिद्धांत

यह अभियान इस सरल परंतु गहन सिद्धांत पर आधारित है: स्वस्थ मिट्टी → उत्पादक कृषि → समृद्ध किसान → सशक्त राष्ट्र। इसका उद्देश्य मृदा संरक्षण को एक तकनीकी विषय से ऊपर उठाकर जन-आंदोलन का रूप देना है। देशभर में KVKs, ICAR संस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, राज्य विभाग एवं जनप्रतिनिधि सप्ताह में पाँच दिन जागरूकता शिविर, प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र भ्रमण आयोजित कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर 12,979 से अधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए जा चुके हैं जिनमें 7.17 लाख से अधिक किसान लाभान्वित हुए हैं।

किन्नौर में अभियान: प्राथमिकता सुदूर गाँवों को

किन्नौर जिले में इस अभियान का नेतृत्व क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (RHRTS) एवं कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), शरबो द्वारा किया जा रहा है। KVK के सहायक निदेशक (R&E) एवं प्रधान डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा के निर्देशन में दिनांक 02 जून 2026 को एक कार्यालय आदेश जारी कर केंद्र के समस्त वैज्ञानिकों को इस अभियान में सक्रिय भागीदारी हेतु निर्देशित किया गया। अभियान के नोडल अधिकारी डॉ. अरुण कुमार, वैज्ञानिक (फल विज्ञान) हैं तथा डॉ. डी.पी. भंडारी, डॉ. बुद्धि राम एवं डॉ. दीपिका समन्वयक की भूमिका निभा रहे हैं।



अभियान में उद्यान विभाग, कृषि विभाग एवं आत्मा (ATMA) किन्नौर का सहयोग लिया जा रहा है। किन्नौर के तीनों विकास खंडों, **कल्पा, पूह एवं निचार**, में दो टीमों के माध्यम से व्यवस्थित टीम-वार ग्राम भ्रमण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय निर्णय यह है कि अभियान का प्रारंभ किन्नौर के सबसे **सुदूर एवं दुर्गम गाँवों** से किया गया, यह निर्णय समावेशी विस्तार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

नाको में प्रथम संयुक्त शिविर: एक झलक

दिनांक **03 जून 2026** को नाको ग्राम पंचायत में आयोजित संयुक्त जागरूकता शिविर में नाको ग्राम पंचायत के नवनिर्वाचित उपप्रधान एवं बड़ी संख्या में कृषक उपस्थित रहे। शिविर में किसानों को **संतुलित उर्वरक उपयोग, प्राकृतिक खेती, जैव उर्वरक, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM), एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM), मृदा स्वास्थ्य संरक्षण** तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों की विस्तृत जानकारी दी गई। विशेषज्ञ दल ने सेब बागानों एवं कृषि क्षेत्रों का प्रत्यक्ष भ्रमण किया तथा किसानों की समस्याओं का मौके पर निदान कर व्यावहारिक समाधान सुझाए। इसी प्रकार **रारंग (09 जून, पूर्वाह्न) एवं रिस्पा (09 जून, अपराह्न)** में भी संयुक्त खेत भ्रमण एवं समस्या निदान शिविर आयोजित किए गए जहाँ किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया एवं विशेषज्ञों से अपनी समस्याओं का तात्कालिक समाधान प्राप्त किया।

किन्नौर की मृदा स्वास्थ्य स्थिति: एक संतोषजनक किन्तु सतर्क चित्र

किन्नौर की मिट्टी उच्च कार्बनिक पदार्थ, अच्छी जैव-विविधता एवं सीमित रासायनिक दोहन के कारण देश के अधिकांश कृषि क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक स्वस्थ है। यहाँ के अधिकांश कृषक एवं बागवान **एकीकृत पोषण पद्धति**, गोबर खाद (FYM), वर्मीकम्पोस्ट, जैव-उर्वरक एवं सीमित रासायनिक उर्वरकों का संयुक्त उपयोग, करते हैं। कुछ प्रगतिशील किसान पूर्णतः प्राकृतिक खेती की ओर भी अग्रसर हैं, जो अत्यंत सराहनीय है। हरी खाद एवं घास पलवार (grass mulching) की अवधारणा से भी कुछ किसान परिचित हैं।

परंतु एक चिंताजनक प्रवृत्ति भी उभर रही है: किसानों में **रासायनिक उर्वरकों की ओर बढ़ती निर्भरता**। एक सामान्य परंतु खतरनाक व्यवहार यह देखा गया है कि अधिकांश किसान अपने बगीचे की मिट्टी का परीक्षण कराए बिना, केवल पड़ोसी किसान की देखादेखी उर्वरक का प्रयोग करते हैं। विशेष रूप से **12:32:16, DAP** जैसे जटिल उर्वरकों का उपयोग सेब बागानों में बढ़ रहा है, जबकि किन्नौर की मिट्टी पहले से ही **फास्फोरस में समृद्ध** है। इससे मिट्टी में फास्फोरस का स्तर अत्यधिक बढ़ रहा है जो जिंक, लोहा जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों के अवशोषण में बाधा उत्पन्न करता है। नाइट्रोजन स्रोत के रूप में कैल्शियम नाइट्रेट एवं यूरिया, पोटैश स्रोत के रूप में MOP तथा जटिल स्रोत के रूप में 12:11:18, 15:15:15, 16:16:16 का भी उपयोग होता है।

प्रमुख संदेश एवं किसानों को दी गई तकनीकी सलाह

1. मृदा परीक्षण एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड

किसानों को सबसे पहला एवं महत्वपूर्ण संदेश यह दिया गया कि **उर्वरक डालने से पहले मिट्टी की जाँच कराएं**। कृषि विभाग अथवा KVK किन्नौर से **मृदा स्वास्थ्य कार्ड** बनवाएं तथा मृदा परीक्षण-आधारित सिफारिशों का पालन करें। यह न केवल आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है बल्कि मिट्टी की दीर्घकालिक उर्वरता के लिए भी अनिवार्य है।

2. एकीकृत पोषण एवं प्राकृतिक खेती

FYM, वर्मीकम्पोस्ट, जैव-उर्वरकों का नियमित उपयोग जारी रखें। **प्राकृतिक खेती** को चरणबद्ध रूप से अपनाने पर बल दिया गया। ATMA एवं KVK किन्नौर दोनों संस्थाएं इस संक्रमण में किसानों की सहायता के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि जब मिट्टी रासायनिक उर्वरकों पर आश्रित हो जाती है तब प्राकृतिक खेती का विकल्प अपनाना अत्यंत कठिन हो जाता है, इसलिए समय रहते सही कदम उठाना आवश्यक है।

3. पर्णपोषण एवं नैनो उर्वरक

बागानों में नाइट्रोजन, जिंक, कैल्शियम, आयरन एवं मैग्नीशियम की दृश्यमान कमी के लक्षण देखे गए। किसानों को बताया गया कि **पर्णपोषण (Foliar Nutrition)** एक अत्यंत प्रभावी विकल्प है जो मिट्टी की रसायन-संरचना को प्रभावित किए बिना पोषक तत्वों की पूर्ति करता है। **नैनो यूरिया, नैनो DAP, नैनो जिंक** जैसे नैनो-उर्वरक सटीक पोषण प्रदान करते हैं एवं मिट्टी को बिल्कुल प्रभावित नहीं करते। एक सुव्यवस्थित छतरी (canopy) वाला पेड़ पर्णपोषण छिड़काव को बेहतर अवशोषित करता है।



4. सिंचाई प्रबंधन एवं कॉलर/जड़ सड़न

कल्पा एवं पूह ब्लॉक में वर्षा सीमित होती है तथा सिंचाई कुहलों के माध्यम से हिमनद जल से की जाती है। एक गंभीर समस्या यह देखी गई कि अनेक किसान सिंचाई जल सीधे तने के पास डालते हैं एवं थाले को तने की ओर ढाल देते हैं। इससे तने के पास जल का ठहराव होता है जो अवायवीय (anaerobic) परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है और कॉलर रॉट एवं जड़ सड़न (Root Rot) का कारण बनता है जिसका कोई स्थायी उपचार नहीं है।

किसानों को समझाया गया कि सेब एवं अन्य फल वृक्ष जल व पोषक तत्व अपनी फीडर जड़ों से अवशोषित करते हैं जो तने से 1-2 फुट की दूरी पर होती हैं। समस्त सिंचाई, उर्वरक एवं पोषण छतरी की ड्रिप लाइन पर अथवा तने से 1-2 फुट दूर केंद्रित करें। यदि कॉलर रॉट, ऊनी सेब एफिड (Woolly Apple Aphid) अथवा जड़ बेधक (Root Borer) का प्रकोप हो तो उपचार के बाद कॉलर क्षेत्र को खुला छोड़ दें, मिट्टी भरने से नमी बनी रहती है जो संक्रमण को और बढ़ाती है।

5. वापसा (Vapsa), प्राकृतिक खेती का जल प्रबंधन समाधान

प्राकृतिक खेती के अंतर्गत वापसा (Vapsa) तकनीक, जिसमें जल वाष्प अथवा फिल्म के रूप में जड़ क्षेत्र तक पहुँचाया जाता है, एक आदर्श समाधान है। पेड़ के तने से उचित दूरी पर वापसा रेखाएँ बनाने से नमी नियंत्रित रहती है, जड़ क्षेत्र में जलभराव नहीं होता और कॉलर रॉट जैसी समस्याओं से बचाव होता है।

6. वैज्ञानिक छतरी प्रबंधन

सभी शिविरों में वैज्ञानिक छतरी प्रबंधन (Canopy Management) पर विशेष बल दिया गया। एक खुली, सुव्यवस्थित छतरी समुचित प्रकाश अवशोषण सुनिश्चित करती है, रोग एवं कीट के लिए प्रतिकूल वातावरण बनाती है तथा फलों की गुणवत्ता एवं रंग में सुधार लाती है। समर प्रूनिंग एवं प्रशिक्षण से पौधे की दक्षता बढ़ती है।

7. एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM)

कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग को हतोत्साहित करते हुए किसानों को जैविक, यांत्रिक एवं सांस्कृतिक उपाय अपनाने की सलाह दी गई। नीम-आधारित उत्पाद एवं प्राकृतिक खेती उत्पाद प्रथम विकल्प होने चाहिए। रासायनिक कीटनाशक केवल अंतिम उपाय के रूप में, उचित निदान के बाद ही उपयोग करें।

सेब के बगीचों में वायरस (Apple Mosaic Virus आदि) का बढ़ता प्रकोप भी देखा गया। किसानों को सलाह दी गई कि केवल प्रमाणित रोगमुक्त रोपण सामग्री का उपयोग करें, कटाई के औजार नियमित रूप से विसंक्रमित करें, संक्रमित पेड़ के पास उपयोग किए जल को भी साफ करें एवं पेड़ों को पोषण से स्वस्थ रखें।



AgriStack: डिजिटल कृषि का नया युग, किसान पंजीकरण

AgriStack Farmer Card, हर किसान की एक डिजिटल पहचान, हर योजना का सीधा लाभ

इस अभियान के दौरान किसानों को भारत सरकार की महत्वाकांक्षी पहल AgriStack Farmer Card Registry के अंतर्गत पंजीकरण के लिए भी जागरूक किया गया। यह एक केंद्रीकृत डिजिटल डेटाबेस है जो देश के प्रत्येक किसान को एक विशिष्ट सत्यापन योग्य किसान पहचान पत्र (Farmer ID) प्रदान करता है।

AgriStack के अंतर्गत किसान की व्यक्तिगत जानकारी, भूमि अभिलेख (Land Records) एवं फसल इतिहास (Crop History) को एक ही मंच पर जोड़ा जाता है। इससे किसानों को सरकारी अनुदान (Subsidies), किसान सम्मान निधि, ऋण (Loans), फसल बीमा, कृषि सलाह एवं अन्य सेवाओं का लाभ सुगमता से एवं बिना बिचौलिए के सीधे प्राप्त होता है। यह प्रणाली न केवल पारदर्शिता सुनिश्चित करती है बल्कि डुप्लीकेट एवं फर्जी लाभार्थियों को भी समाप्त करती है।

किन्नौर जैसे सुदूर पर्वतीय जिले में, जहाँ किसानों तक सरकारी योजनाओं की पहुँच भौगोलिक कारणों से अपेक्षाकृत कठिन है, AgriStack Farmer ID एक डिजिटल सेतु का काम करेगी। किसानों से अनुरोध किया गया कि वे कृषि विभाग अथवा KVK के माध्यम से अपना पंजीकरण शीघ्र पूर्ण करें एवं इस डिजिटल कृषि क्रांति के लाभार्थी बनें।

निष्कर्ष: मिट्टी बचाना ही किन्नौर का भविष्य बचाना है

"खेत बचाओ अभियान" किन्नौर के लिए महज एक सरकारी कार्यक्रम नहीं है, यह उस पर्वतीय सभ्यता की आत्म-रक्षा का आह्वान है जो पीढ़ियों से मिट्टी की कोख से अपना जीवन रचती आई है। किन्नौर की खेती और बागवानी केवल वर्तमान पीढ़ी की आजीविका नहीं हैं, ये आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं।



KVK शरबो, कृषि विभाग, उद्यान विभाग एवं ATMA की समन्वित टीमों जून 2026 के अंत तक किन्नौर के हर महत्वपूर्ण गाँव तक पहुँचेंगी। कल्पा, पूह एवं निचार तीनों ब्लॉकों में 21 से अधिक गाँवों को कवर करने का लक्ष्य है। यह प्रयास प्रमाण है कि विज्ञान एवं सेवा साथ मिलकर पर्वतीय कृषि को टिकाऊ, उत्पादक एवं स्वस्थ बना सकते हैं।

"स्वस्थ मिट्टी → उत्पादक बगीचा → समृद्ध किसान → सशक्त किन्नौर → सशक्त राष्ट्र"